

# भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ( माओवादी )

## केन्द्रीय कमेटी



### प्रेस विज्ञप्ति

30 जुलाई 2010

**कश्मीरी जनता पर आए दिन गोलीबारी व हमले करते हुए नौजवानों की निर्मम हत्या कर रहे भारत के सरकारी सशस्त्र बलों के जुल्मों का पुरजोर विरोध करो!**

**कश्मीर कश्मीरियों का ही है! कश्मीरी जनता के न्यायपूर्ण राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का बेखौफ समर्थन करो!!**

पिछले एक माह से कश्मीर फिर एक बार भड़क रहा है। हर दिन भारत सरकार के पुलिस/अर्ध-सैनिक बल वहां की जनता पर अंधाधुंध गोलीबारियां करते हुए अब तक 19 लोगों (इनमें ज्यादातर 13 से 19 साल के बीच के हैं) को मौत के घाट उतार चुके हैं। सैकड़ों लोग घायल हो गए। ताजातरीन घटना में आज 30 जुलाई को कश्मीर घाटी में कई जगहों पर हुए जन प्रदर्शनों के दौरान पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों ने गोलीबारी की जिसमें कम से कम 4 लोगों की जानें गईं और सौ से ज्यादा लोग घायल हो गए। भारत के शासक वर्ग भले ही यह दावा करते हों कि कश्मीर में अब मिलिटेंन्सी खत्म हो गई है और वहां के 'अलगाववादी' संगठनों को कुचला जा चुका है, पर सच यह है कि कश्मीरी जनता हर दिन किसी न किसी समस्या को लेकर संघर्ष कर ही रही है। 2008 में अमरनाथ श्राइनबोर्ड के विवाद के संदर्भ में और 2009 में शेपियन कस्बे में दो महिलाओं के साथ बलात्कार और हत्या की घटना को लेकर कश्मीरी जनता ने बड़े पैमाने पर सड़कों पर आकर पुलिस/अर्ध-सैनिक बलों की गोलीबारी की परवाह किए बगैर तथा कर्फ्यू और प्रतिबंधों को धता बताते हुए लहरों की तरह कई दिनों तक संघर्ष को जारी रखा था। अबकी बार 11 जून को पुलिस द्वारा छोड़े गए आंसू गैस का गोला फटने से एक स्कूली छात्र के मारे जाने की घटना को लेकर ताजातरीन विरोध-आंदोलन शुरू हुआ है। कश्मीरी जनता के शांतिपूर्ण व लेकतांत्रिक विरोध-संघर्षों से भी खफा भारत सरकार और उसकी जी-हुजूरी करने वाली उमर अब्दुल्ला सरकार ने अभी तक कई बार गोलीबारी, कर्फ्यू, लाठीचार्ज व आंसू गैस का प्रयोग किया पर यह आंदोलन बिना रुके अभी भी जारी है।

गौरतलब है कि कश्मीर में विरोध-संघर्ष चाहे किसी भी रूप में या किसी भी मुद्दे पर शुरू होता हो, उसमें 'आजादी' का ही नारा प्रमुखता से उभरकर आता है। यह कश्मीरी जनता के दिलोदिमाग में अपनी राष्ट्रीयता की मुक्ति के प्रति और अपनी आजादी के प्रति मौजूद अदम्य चाहत का प्रतिबिंब है। भारतीय विस्तारवादी शासक मीडिया के जरिए भले ही खूब प्रचारित करे कि 'कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है', इतिहास की जानकारी रखने वाला कोई भी शख्स इस सच्चाई को नकार नहीं सकता कि कश्मीर भारत का हिस्सा कभी नहीं रहा था और वह एक अलग देश के रूप में कई सालों से बना रहा था। दूध के दांत टूटे हुए नन्हे बच्चों से लेकर कश्मीरी समाज के हर शख्स के अंदर अपनी 'आजादी' की जबर्दस्त चाहत जो दिखाई देती है, उसका सिर्फ लश्कर-ए-तोइबा के द्वारा बढ़ावा दिए जाने से या विदेशी ताकतों के द्वारा पैसा दिए जाने से ही उत्पन्न परिणाम के रूप में गलत चित्रण करना कश्मीरी जनता की आकांक्षाओं और आत्मसम्मान का घोर अपमान है। 7 लाख से ज्यादा विभिन्न सशस्त्र बलों की तैनाती से दुनिया में ही सबसे ज्यादा सैन्यीकृत इलाका माने जाने वाले कश्मीर में हालांकि सशस्त्र संघर्ष करने वाले संगठन फिलहाल कमजोर पड़ चुके हैं, लेकिन जनता, खासकर नौजवान अपने हाथ में मिले पत्थरों का ही हथियार के तौर पर प्रयोग करते हुए पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों से जूझ रहे हैं। इसे उनमें छिपी आजादी की जबर्दस्त आकांक्षा की अभिव्यक्ति के रूप में न देखते हुए भारत के शासक ऐसा दुष्प्रचार कर रहे हैं मानों आखिर उनके हाथों में पत्थर भी विदेशों से आयातित किए गए हों। जिस तरह गेंद को जितने जोर से जमीन पर मारने से उतने ही जोर से ऊपर उछलती है, उसी तरह बर्बरतम दमन चलाने के बावजूद भी कश्मीरी जनता के संघर्ष उतने ही उग्र होने लगे हैं। इन संघर्षों के फलस्वरूप मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला समेत शासक नेशनल कान्फ्रेंस गिरोह, विपक्षी पीडीपी और यहां तक हुरियत का नरमपंथी धड़ा भी पूरी तरह अलग-थलग पड़ चुके हैं। जनता की तीखी नफरत का शिकार बनकर वो लाचारी में छटपटा रहे हैं। कश्मीरी जनता उनके मुंह पर ही 'भारतीय कुत्ता' कहकर दुत्कार रही है।

निरंतर जारी कर्फ्यू, गोलीबारी, 'मुठभेड़' हत्याओं, लापता करना, पग-पग पर अपमानजनक तलाशी आदि तमाम अमानवीय हालात की परवाह किए बगैर पुलिस की गोलीबारियों में मारे जाने वाले नौजवानों के जनाजों में हजारों की तादाद में उमड़ते हुए और समूची घाटी को जंग-ए-मैदान में तब्दील करते हुए हत्यारे पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों से जूझ रही कश्मीरियों का भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) तहेदिल से इंकलाबी सलाम पेश करती है। सीआरपीएफ और पुलिस बल कश्मीर में जिस तरह निहत्थे नौजवानों की अंधाधुंध गोली मारकर हत्या कर रहे हैं, उसी तरह यहां हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी संघर्ष के इलाकों में, खासकर दण्डकारण्य में कई निहत्थे आदिवासियों का नरसंहार कर रहे हैं। वहां पर आप लोग हाथ में आए पत्थरों से भाड़े के बलों के अत्याधुनिक हथियारों के सामने सीना तानकर खड़े होकर जवाब दे रहे हैं, यहां पर तीर-धनुषों से ही हमारी जनता लड़ रही है। चूंकि यहां की जनता की सुरक्षा में हमारी पार्टी के नेतृत्व में जन मुक्ति छापामार सेना खड़ी है, इसलिए आतंकी बलों पर हम कड़े प्रहार कर पा रहे हैं। यहां भी और वहां भी दुश्मन एक ही है। सामंती और बड़े पूंजीपति शासक वर्ग और उनके समर्थन में खड़े साम्राज्यवादी ही वहां और यहां पर अपने पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों को जनता के ऊपर उकसा रहे हैं। क्रांतिकारी आंदोलन के समूल उन्मूलन के लक्ष्य से 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से जनता के खिलाफ जारी युद्ध के तहत कई जुल्म व अत्याचार कर रहे हैं। हम वादा करते हैं कि इन सांझे शत्रु बलों के खिलाफ आपके द्वारा किए जा रहे सभी संघर्षों का हमारी पार्टी, जन सेना और क्रांतिकारी जनता समर्थन करती रहेंगी।

कश्मीर पूरी तरह कश्मीरी जनता का ही है। उसके भविष्य का फैसला लेने का अधिकार सिर्फ कश्मीरियों को ही होना चाहिए। न तो भारत सरकार को और न ही पाकिस्तान को कश्मीर पर कोई अधिकार है। कश्मीरी जनता का 'आजादी' आंदोलन पूरी तरह न्यायसम्मत है। कश्मीरी जनता की आजादी की तमन्ना को कुचलने के लिए ही भारतीय शासक वर्ग उसके खिलाफ नीचतापूर्ण दुष्प्रचार करते हुए अंतहीन दमन और फासीवादी हत्याकाण्डों को अंजाम दे रहे हैं। इसका हिस्सा ही है लगातार हो रही गोलीबारी की घटनाएं... कश्मीरी युवाओं को गोली मारकर कत्ल करने वाली घटनाएं। हम समूचे देशवासियों और जनवादियों से आग्रह करते हैं कि वे सरकार से मांग करें कि कश्मीर से तमाम अर्ध-सैनिक व सैनिक बलों को हटाया जाए और कश्मीरी नौजवानों को गोलियों से भून डालने वाले पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों और उनके अधिकारियों पर कड़ी कार्रवाई की जाए। हम तमाम देशवासियों से अपील करते हैं कि वे कश्मीरी जनता के खिलाफ तथा उसके द्वारा जारी जायज संघर्षों के खिलाफ शोषक शासक वर्गों, खासकर भगवा आतंकवादी गिरोह द्वारा सुनियोजित ढंग से जारी भड़काऊ दुष्प्रचार से प्रभावित न हों और सच्चाई को समझते हुए न्याय के पक्ष में मजबूती से खड़े हों। कश्मीरी जनता के इस जबर्दस्त संघर्ष के सामने नैतिक रूप से पराजित होकर और ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम पर आदिवासियों के ऊपर अत्यधिक हिंसा व आतंक मचाने के बावजूद भी सामने आ रहे तीखे जन प्रतिरोध से बौखलाए हुए चिदम्बरम गिरोह 'बातचीत' के नाम से और 'शान्ति' के नाम से जो बकवास कर रहा है उससे किसी को भ्रमित नहीं होना नहीं चाहिए। हमारी पार्टी समूचे अवाम से इस सच्चाई को देखने की अपील करती है कि जनता की वास्तविक शान्ति, सुहृद्भाव, स्वतंत्रता आदि के लिए भारत के शासक वर्गों के साथ-साथ उनसे गुंथे हुए साम्राज्यवादी ही सबसे बड़े दुश्मन हैं। हम तमाम जनता के सामने यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि इन सांझे दुश्मनों के खिलाफ सभी वर्गों और सभी राष्ट्रीयताओं के लोग जब तमाम तरह के संघर्षों को तेज करेंगे और जब उनकी शोषणकारी व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंकेंगे तभी असली शान्ति और भाईचारा कायम होंगे तथा तभी जनता को रोटी, कपड़ा, मकान, स्वतंत्रता, सम्मान व समानता मिल जाएंगे।

**अभय**

**प्रवक्ता**

**केन्द्रीय कमेटी**

**भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ( माओवादी )**